कु. तृप्ति अग्रवाल
शोधार्थी : संगीत विभाग
(निर्देशिका)
डॉ. शर्मिला टेलर
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान

भारतीय फिल्मों में संगीत का महत्व

संगीत मानव हृदय का सूक्ष्म स्पन्दन है। स्वर में असीम शक्ति है। इसी कारण भावाभिव्यक्ति का अनन्य साधारण माध्यम हैं संगीत किसी भी मोड़ से गुजरे किसी भी आकार में ढले या किसी भी वर्ग में पले, वह आनन्दमयी ही होता है। अर्थात् संगीत के किसी भी क्षेत्र में प्रवेश करने पर, निश्चित रूप से आनन्द ही प्राप्त होगा, चाहे वहाँ लोक संगीत हो, सुगम संगीत हो, चित्रपट संगीत हो अथवा शास्त्रीय संगीत। मानव की बदलती हुई रूचि एवं प्रवृत्ति के कारण उपरोक्त कलाओं का जन्म हुआ। उसी प्रकार विज्ञान के आविष्कारों तथा मानव के प्रयासों ने प्राचीन नाट्य कला को चित्रपट के रूप में परिवर्तित कर दिया। यूं तो चित्रपट में विभिन्न कलाओं का समावेश रहता है। फिर भी यह एक स्वतन्त्र यांत्रिक कला है।

चित्रपट, रंगमंच के समान दृश्य एवं श्रव्य कला का एक नवीन स्वरूप है। समाज का सर्वोपरि मनोरंजन करने वाली कला जिसमें नाट्य और संगीत दोनों ही समाहित थे, चित्रपट संगीत के नाम से समाज के सम्मुख आई। प्रत्यक्ष में चित्रपट संगीत सर्वसाधारण समाज के सभी वर्गों का प्रिय संगीत कहलाया। चित्रपट संगीत गाँव में रहने वाली सीधी–सादी जनता, शहर का पढ़ा–लिखा परन्तु शास्त्रीय में अनभिज्ञ जनमानस या शास्त्रीय संगीत जानने वाला वैशिष्टयपूर्ण अभिजात कला प्रेमी वर्ग, सभी के लिए मनोरंजन उत्साहपूर्वक तथा चैतन्यपूर्ण समृद्ध संगीत धारा है।

"गीत–संगीत का भारतीय जीवन में अभिन्न स्थान रहा है। बिना गीत–संगीत के फिल्म की सफलता की कामना भी नहीं की जा सकती है।" 1

फिल्मों में संगीत का पदार्पण :–

"भारतीय फिल्मों में संगीत का महत्व उस समय में है जब मूक (साइलेंट) फिल्में बन रही थीं। इन मूक फिल्मों हेतु पर्दे के सामने एक पिट में साजिन्दे बैठा दिये जाते थे और वे दृश्य के अनुकूल धुनें बजाते रहते थे। बोलती हुई फिल्मों का निर्माण शुरू होने पर संवादों के साथ गीत भी जुड गये।" 2

"भारत में 14 मार्च 1931 को पहली बोलती फिल्म 'आलमआरा' से ही फिल्मों में संगीत भी प्रवेश कर गया। इस फिल्म में फिरोजशाह एम. मिस्त्री एवं बी. ईरानी ने संगीत दिया था।" 3

'आलमआरा' के बाद एक बड़ी फिल्म आयी। 'शीरीं फरहाद'। मादन थियेटर्स की इस फिल्म में 17 गाने थे। यह संगीत–प्रधान फिल्म थी। इसके गीतों को जहाँआरा कज्जन तथा मास्टर निसार ने अभिनय के साथ गया। जहाँआरा कज्जन की सुरीली आवाज और बेहतरीन रिकॉर्डिंग के कारण देशभर में उसने खूब प्रशंसा व पैसा कमाया। मादन थियेटर्स वालों ने संगीत प्रधान फिल्में बनाने की परम्परा शुरू कर दी थी।" 4

1952 की श्रेष्ठतम फिल्म 'बैजूबावरा' थी। संगीतकार नौशाद के संगीत से सजी इस फिल्म का हर गीत शास्त्रीय संगीत में ढ़ला था। गीतकार शकील बदायूँनी के गीत गली–गली में गूंज उठे। इसका संगीत उस समय भी हिट हुआ था जिस समय विदेशी संगीत का प्रभाव फिल्म संगीत पर चल रहा था। पं. डी. बी. पुस्कर और उस्ताद अमीर खाँ ने मिलकर इसका गीत 'आज गावत मन मेरो' गाया था। 'मत तड़पत हरि दरसन को आज' नामक भक्ति गीत ख्याल शैली में राग मालकौंस में बांधा गया था और यही गीत उतना ही लोकप्रिय हुआ था जितना कि कोई भी मैलोडी प्रधान गीत हुआ करता था। आज भी इसके संगीत को लोग याद करते हैं।

"सी. रामचन्द्र के संगीत से सजी 'अनारकली' बेहद सफल फिल्म रही। आज भी इसका एक नगमा सुरों का जादू बिखेरता है।" 5

सन् 1990 से 2000 के बीच के समय की कुछ फिल्में पारिवारिक दृष्टिकोण पर आधारित थीं जिनका संगीत बहुत प्रसिद्ध हुआ। बहुत की मधुर संगीत से सजी फिल्मों में प्रमुख रहीं – 'हम आपके हैं कौन', 'दिलवाले दुल्हनियाँ ले जायेंगे', 'राजा हिन्दुस्तानी', 'बॉर्डर', 'कुछ–कुछ होता है', 'ताल', 'हम दिल दे चुके सनम' आदि। 'हम दिल दे चुके सनम' का संगीत गुजराती संस्कृति पर आधारित था। इसके सभी गीत बहुत प्रसिद्ध हुए, मधुरता से परिपूर्ण गीतों में 'निम्बोडा–निम्बोडा', 'ढोल बाजे ढोल' तथा एक गीत भारतीय शास्त्रीय संगीत तथा पाश्चात्य संगीत का सम्मिश्रण था – 'अलबेला सजन आयो रे' का बहुत ही अलग प्रयोग रहा।

सन् 2002 में फिल्म संगीत की सबसे अच्छी फिल्म 'देवदास' है। इसके सभी गीतों को संगीतकारों के अथक प्रयास से संगीतमय एवं कर्णप्रिय बनाया गया है जिनमें – 'डोला रे डोला', 'मार डाला', 'छलक–छलक छल', 'काहे छेड़–छेड़ मोहे' आदि प्रमुख हैं। जिनमें भारतीय शास्त्रीय संगीत को आधार मानकर उसके साथ पाश्चात्य संगीत व ऑर्केस्ट्रा का बेजोड़ मिश्रण करके व संगीत के उच्चकोटि के महान संगीतज्ञ पं. बिरजू महाराज का गायन एवं नृत्य भी फिल्म संगीत के माध्यम से मानवजन तक पहुँचा है। प्रत्येक मानव संगीत सुनकर बहुत खुशी का अनुभव करता है तथा सीखने का भी प्रयास करता है।

संगीत निर्देशकों का संगीत में योगदान :–

किसी भी फिल्म की सफलता व उसके संगीत को लोकप्रिय बनाने में संगीत–निर्देशक का विशेष योगदान रहता है। किसी भी सांगीतिक विधा को या रचना को तैयार करने में निर्देशक की अहम् भूमिका रहती है। इसके लिए उसे बुद्धिमान व प्रतिभाशाली होना चाहिए। साहित्य से लेकर लोकधुनों और लोकहृदय की उसे गहरी पहचान होना आवश्यक है। "फिल्मों में प्रयुक्त होने वाले गीत और उनके संगीत की निर्माण–प्रक्रिया में भी गीतकार, संगीतकार, अरेंजर, गायक – गायिका, विभिन्न वाद्यवादक, रिकॉर्डिस्ट का सामूहिक योगदान रहता है। फिल्म में, उसके वातावरण के अनुकूल प्रयोग को, निर्देशक ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 6

जब भारतीय फिल्मों में संगीत प्रस्तुत किया जाने लगा तो फिल्मों की लोकप्रियता और बढ़ गई। फिल्मों में संगीत देने का श्रेय संगीत–निर्देशक या फिल्म संगीतकार को जाता है। सी. रामचन्द्र का 'पतंगा' चित्रपट का एक हल्का–फुल्का गीत 'मेरे पिया गये रंगून' जिसे शमशाद बेगम व चितलकर ने बड़े मस्ताने अन्दाज में गाया है जो सदाबहार गीत है। चित्रपट 'शहनाई' का गीत 'आना मेरी जान सण्डे के सण्डे' मीना कपूर और सी. रामचन्द्र द्वारा गाया गया एवं बहुत लोकप्रिय रहा। "सन् 1938 में 'ग्रामोफोन–सिंगर' चित्रपट में संगीतकार अनिल बिस्वास ने संगीत दिया। इसका एक गीत 'काहे अकेला डोलत बादल' जिसे गाया था सुरेन्द्र ने। यह गीत विशेष लोकप्रिय हुआ है।"

दर्शकों के मस्तिष्क पर सिनेमा के बढ़ते प्रभुत्व का प्रधान कारण है सिनेमा का 'माईमेटिक' (मूक) कला न होना। भारतीय सिनेमा के जन्मदाता दादासाहब फाल्के ने कहा था – "फिल्म मनोरंजन का उत्तम माध्यम है लेकिन वह ज्ञानवर्धन के लिए भी अत्यन्त बेहतरीन माध्यम है। अन्ततः फिल्म इन दोनों चीजों मनोरंजन और ज्ञानवर्धन पर टिकी हुई है।" 7

भारतीय फिल्मों में संगीत का महत्व :–

भारतीयों फिल्मों में संगीत का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ने लगा। ग्रामोफोन, रिकॉर्ड और रेडियो ने सिनेमा–हॉल से बाहर भी फिल्म के गीतों को सुनने की सुविधा जुटा दी। इससे फिल्मी गानों की ताकत लगातार बढ़ती गई और फिल्मी गानों की ताकत यहाँ तक बढ़ी कि लोग कभी–कभी तो सिर्फ गानों के लिए फिल्म देखने जाते थे।फिल्मी गीतों ने बीसवीं सदी में हमारे देश में जो तहलका मचाया, उसकी मिसाल दुनिया में कहीं और नहीं मिलती। भारतीय संगीत में इस सदी की सबसे बड़ी क्रांति फिल्मी गीतों के जरिये हुई। इन फिल्मी गीतों के सुर–लय व ताल की झनकार से हिन्दुस्तान सुरीला हो गया। संगीतकारों ने फिल्म–संगीत में शास्त्रीय संगीत को आधार रख फिल्म संगीत के स्तर को ऊँचा रखा और हम लोगों को इतनी मीठी धुनें बनाकर दी जिन्हें हम कभी नहीं भूलेंगे।

"लता जी कहती हैं – मेरी मान्यता है कि शास्त्रीय रागों पर आधारित गीतों में अधिक–जीवन शक्ति होती है और ऐसे कई गीत हैं, जो वर्षों पुराने हैं किन्तु आज भी उसी तरह ताजे हैं।" 8

हिन्दी सिनेमा का अस्तित्व पूरी तरह से गीतों के साथ जुड़ा है। दर्शक फिल्म में अच्छे मौलिक गीत चाहता है जिसे वह आसानी से गुनगुना भी सके। फिल्मों में संगीत का व्यापक प्रचार होने से भारतीय फिल्मों को अपार सफलता मिली है।

उपसंहार –

"मानव हृदय, भावनाओं और संवेदनाओं से परिपूर्ण है। मानव अपने उदगारों को, अपने भावों को, अभिव्यक्त करता है। चाहे वे, हर्ष के क्षण हों या हृदय की पीड़ा, ममता का वात्सल्य हो या ईश्वर प्रेम, देशभक्ति प्रेम हो या शत्रु के प्रति बदले की भावना आदि सभी भावों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम संगीत है। यह संगीत भी निश्चित रूप से चित्रपट संगीत हैं वैसे तो मानव मन को प्रभावित करने के अनेक माध्यम हैं परन्तु चित्रपट संगीत एक ऐसा माध्यम है जो प्रत्येक मानव के हृदय में रच–बस गया है। चित्रपटों में जब से संगीत का प्रयोग होने लगा तब से चित्रपट संगीत, मानव जीवन का एक अनिवार्य अंग बन गया है।" चित्रपट संगीत एक सुन्दर और वैचित्र्यपूर्ण विधा है जिसका फलक बहुत विस्तृत है। चित्रपट को अच्छे गीत–संगीत के कारण ही याद किया जाता है। सौ वर्षों से भी अधिक लम्बी और दुर्गम यात्रा तय करने के बाद में भी हिन्दी–सिनेमा गंभीर अध्ययन का विषय नहीं बन पाया हैं इस विशालतम सिनेजगत के शोध की व अध्ययन की असीमित सम्भावनाएँ एक आवश्यकताएँ हैं। अतः फिल्म संगीत का मानव जीवन में विशेष महत्व है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. विमल डॉ., 2005, हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास संजय प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण
2. शर्मा डॉ. इन्दु, 2006, भारतीय फिल्म संगीत में ताल–समन्वय, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रथम संस्करण
3. सिंह हरमिन्दर 'हमराज', श्रीमती सविन्दर कौर, हिन्दी फिल्म गीतकोश, खण्ड–1
4. गर्ग डॉ. उमा, संगीत का सौन्दर्यबोध (फिल्म संगीत के सन्दर्भ में), संजय प्रकाशन, दिल्ली
5. परांजपे डॉ. श्रीधर, 1969, भारतीय संगीत का इतिहास, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, प्रथम संस्करण
6. सिंह हरमल, फिल्में कैसे बनती हैं।

7. माहेश्वरी डॉ. ओंकारप्रसाद, 1978, हिन्दी चित्रपट का गीति साहित्य, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, प्रथम संस्करण
8. बीती यादों के रंग, 10 फरवरी, 2002 इन्द्रधनुष के संग, 'चित्रपट संगीत', नवभारत टाइम्स

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. हरमल सिंह, फिल्में कैसे बनती हैं, पृ.–1
2. डॉ. इन्दु शर्मा,'सौरभ', भारतीय फिल्म–संगीत में ताल–समन्वय, पेज न.–26
3. हरमिन्दर सिंह 'हमराज', 'हिन्दी फिल्म गीतकोश', खण्ड–1,(1988),
4. डॉ. ओंकार प्रसाद माहेश्वरी, 'हिन्दी चित्रपट का गीतिसाहित्य', प्रथम संस्करण (1978), पृ.–27
5. डॉ. इन्दू शर्मा 'सौरभ', भारतीय फिल्म–संगीत में ताल–समन्वय, पृ.–35
6. बीती यादों के रंग इन्द्रधनुष के संग, 'चित्रपट संगीत' नवभारत टाइम्स, 10 फरवरी 2002 पृ. 2
7. डॉ. इन्द्र शर्मा सौरभ, भारतीय फिल्म संगीत में ताल समन्वय, पृ. 203
8. वही0, पृ. 205